महामत कहे सुनो मोमिनों, बीच टापू जल गिरदवाए।
ए अति ऊंचे मोहोल सुन्दर, देखो अपनी रूह जगाए।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो, सागरों के अन्दर बारह हजार की बारह हजार हारें टापुओं की हैं जिनके चारों तरफ जल है। यह टापू महल बहुत ऊंचे और बहुत सुन्दर हैं। अपनी रूह को जगाकर देखो।

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ११६६ ॥

पुखराज से पाट घाट तांईं
(पुखराज पहाड़ से पाट घाट तक)

सुख क्यों कहूं पहाड़ पुखराज के, और कहा कहूं मोहोल तले।
ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते, मोहोल तीसरे तिन उपले।। १ ।।

पुखराज पहाड़ के सुखों का कैसे वर्णन करूं? इसके नीचे कैसे सुन्दर महल बने हैं जो नीचे से संकरे और ऊपर चढ़ते-चढ़ते (दो सौ पचास) भोम तक चौड़े हो गए हैं। उसी के ऊपर इसके तीन गुनी (७५०) भोम आती है।

आठ पहाड़ तले मोहोल के, ऊपर ताल पुखराज।
कई मोहोलातें आठों पर, ऊंचे रहे मोहोल बिराज।। २ ।।

पुखराज पहाड़ के नीचे तलहटी में आठ पहाड़ों की शोभा दिखाई देती है। पांच तलहटी के पेड़, दो घाटी के और एक बंगलों का, बंगलों के ऊपर पुखराज ताल की शोभा है। इन पहाड़ों पर बड़ी ऊंची-ऊंची मोहोलातें शोभा देती हैं।

ताल ऊपर मोहोलात जो, आठ पहाड़ तले जो इन।
मोहोल उपले आकास लों, किया निपट नूर रोसन।। ३ ।।

पुखराज ताल के ऊपर की मोहोलातें तथा उसके नीचे के आठ पहाड़ और ऊपर आकाशी महल के नूर की बेशुमार शोभा है।

निपट बड़े मोहोल पहाड़ के, निपट बड़े दरबार।
कब सुख लेसी इनके, ए धनी तुमहीं देवनहार।। ४ ।।

पुखराज पहाड़ में बड़े-बड़े महल बने हैं तथा बड़ी-बड़ी पड़सालें (देहलान) बनी हैं। धनी इनके सुख आप ही देने वाले हैं यह हमें कब मिलेंगे?

इत बड़े जानवर खेलत, आगूं बड़े दरबार।
ए सुख कब हम लेयसी, मोमिन इत इंतजार।। ५ ।।

इन बड़ी-बड़ी देहलानों के आगे जानवर कई तरह के खेल करते हैं। हम मोमिन यहां इन्तजार कर रहे हैं कि वह सुख हमें फिर कब मिलेंगे?

कई रंगों कई विध खेलत, पहाड़ से सेत फील।
दम न रहें मासूक बिना, धनी क्यों डारी बीच ढील।। ६ ।।

पहाड़ से सफेद हाथी कई कलाओं से कई तरह के खेल करते हैं। हे श्री राजजी महाराज! अब देरी क्यों कर रहे हो? हम आपके बिना एक पल नहीं रह सकते।

Nijanand App

कहां गए सुख आपके, हम कहां पुकारें जाए।
तुम बिना नहीं कोई कितहूं, मोमिन बेसक किए बनाए।। ७ ।।

आपके सुख कहां चले गए? हम कहां जाकर पुकारें? आपने अपने अतिरिक्त मोमिनों को कोई और ठिकाना बताया ही नहीं।

और सुख पहाड़ ताल के, तीनों तरफों मोहोलात।
पहाड़ सुख मोहोल अंदर, जो कई नेहेरें चली जात।। ८ ।।

पुखराज ताल के तीन तरफ जवेरों की मोहोलातें हैं। पहाड़ के अन्दर भी बहुत महल हैं जहां कई तरह की नहरें चलती हैं।

गुरज दोऊ के बीच में, गिरत चादरें चार।
चार चार हर एक में, उतरत सोले धार।। ९ ।।

दोनों गुर्जों के बीच में होकर पुखराजी पहाड़ से जमुनाजी चार धाराओं में पुखराज ताल में गिरती हैं। इसी तरह से पुखराजी ताल से यह बीच के कुण्ड में चार धाराएं सोलह धाराओं में गिरती हैं।

सो परत बीचले कुंड में, इत चारों तरफ देहेलान।
ए सुख कब हम लेयसी, इन मेले साथ मेहेरबान।। १० ।।

यह सोलह धाराएं अधबीच के कुण्ड में गिरती हैं। यहां चारों तरफ से देहलानें और खास महल आए हैं। हे मेहरबान श्री राजजी महाराज! हम आपके साथ मिलकर यह सुख कब लेंगी?

कब सुख लेसी बंगलों, जित नेहेरें चलें चक्राव।
बीच बीच बगीचे चेहेबच्चे, कई जल उतरे तले तलाव।। ११ ।।

पुखराजी ताल के नीचे (अड़तालीस बंगलों के अड़तालीस हारों की) बंगलों की बेशुमार शोभा है। यहां नहरें भंवर के साथ चलती हैं जो बगीचों के चहबच्चों से उतरती हुई नीचे तलहटी के ताल में जाती हैं।

इन मोहोलों इन बंगलों, इन चेहेबच्चों बगीचों।
ए सुख छाया बन की, कब देओगे हमकों। १२ ।।

इन महलों में, बंगलों में, चहबच्चों और बगीचों में तथा वन की छाया में भी बेशुमार सुख हैं। यह सुख धनी हमें कब दोगे?

कई सुख बीच बंगलों, कई सुख खूब खुसाली खास।
सो दिल कब हम देखसी, हकसों विविध विलास।। १३ ।।

बंगलों के बीच में खूब खुशालियों की सेवा के सुख तथा श्री राजजी महाराज आपके साथ आनन्द करने के सुख अब हम कब देख पाएंगे?

एक सब्द सखी बोलते, कई ठौरों उठें जी जी कार।
मन सरूप कई सोहागनी, कई एक पांउं खड़ियां हजार।। १४ ।।

एक सखी कुछ कहती थी तो हजारों खूब खुशालियां 'जी-जी' कहकर सेवा के लिए दौड़ती थीं। यह रूहों को प्रसन्न करने के लिए भी रूहों के मन के स्वरूप खूब खुशालियां एक पैर पर खड़ी रहती थीं।

Nijanand App

सखी कछुक मन में चाहत, सो आगूं खड़ी ले आए।
यों चित चाहे सुख धाम के, कब लेसी हम जाए।। १५ ।।

सखी मन में कुछ इच्छा करती है तो उसे कहने की जरूरत नहीं पड़ती। खूब खुशाली पहले ही लेकर आ जाती है। इस तरह से मन चाहे परमधाम के सुख हमें कब मिलेंगे?

जोए जितथें हुई जाहेर, कहां सुख इन चबूतर।
आगूं कुंड जल चलकत, बड़ा बन सोभा ऊपर।। १६ ।।

जमुनाजी पुखराज पहाड़ से खुली चलीं उस चबूतरे की शोभा का वर्णन कैसे करूं और फिर आगे अधबीच के कुण्ड में धाराएं गिरीं इसके ऊपर बड़े वन की शोभा है।

ए बन गिरद पुखराज के, बड़ा बन खूबी लेत।
ए फेर मिल्या बन जोए के, नूर आकास भर्‌यो जिमी सेत।। १७ ।।

यह बड़ा वन पुखराज को घेरकर जमुनाजी की पूरी परिकरमा करता है और बड़ा सुन्दर है। इसका तेज आकाश तक फैलता है।

इत अनेक वनस्पति, कई पसु पंखी करें जिकर।
हम इत सुख लेती हक सों, जानों बैठक एही खूबतर।। १८ ।।

यहां अनेक तरह के वृक्ष हैं। जहां कई प्रकार के पशु-पक्षी पिऊ-पिऊ की आवाज करते हैं। हम रूहें श्री राजजी महाराज के साथ सुख लेती हैं और इसी बैठक को ही अच्छा समझती हैं।

ए बन मोहोल कई विध के, बड़े बड़े कई बड़े रे।
मोहोल मंदिरों हिसाब नहीं, चौड़े चौड़े कई चौड़े रे।। १९ ।।

वन तथा महल कई तरह के हैं जो एक-दूसरे से बड़े होते जाते हैं और चौड़े होते जाते हैं। इन महलों और मन्दिरों का कोई हिसाब नहीं है। यह बेशुमार हैं।

जब पीछल चले पुखराज के, अति चौड़ो बड़ो विस्तार।
ए बन खूबी क्यों कहूं, आवत नहीं सुमार।। २० ।।

जब पीछे पुखराज की तरफ चलते हैं तो इसकी चौड़ाई बढ़ जाती है। इस वन की खूबी कैसे कहूं? यह बेशुमार है।

एक एक पेड़ पर कई भोमें, भोम भोम कई जुगत।
पसु पंखी एक बिरिख पर, कई जुगतें बास बसत।। २१ ।।

एक-एक पेड़ में कई भोमे बनी हैं और एक-एक भोम में कई तरह के बाग बगीचे बने हैं। पशु-पक्षी इन वृक्षों में कई तरह से रहते हैं।

कई तेज जोत प्रकास में, अवकास भर्‌यो ताके नूर।
जिमी मोहोल बन पसु पंखी, ए कब देखें अर्स जहूर।। २२ ।।

इन पशु-पक्षियों के तेज की रोशनी आकाश में जगमगाती है। यहां के जमीन, महल, वन और पशु-पक्षी हम कब देखेंगे?

Nijanand App

ए बन जाए बड़े बन मिल्या, चल गया पुखराज पार।
अर्स बन सोभा क्यों कहूं, और बन दोऊ किनार।। २३ ।।

यह महा-वन पुखराज के आगे बड़े-वन में मिल जाता है। परमधाम के इन वनों की शोभा कैसे कहूं? यह जमुनाजी के दोनों किनारों पर आए हैं।

कुंड आगे ढांपी चली, अदभुत ऊपर मोहोलात।
अंदर बैठकें क्यों कहूं, दोऊ किनार लिए चली जात।। २४ ।।

मूल कुण्ड के आगे आधी दूर तक जमुनाजी ढकी चल रही हैं जिसके ऊपर महल बने हैं। पुल, महल के नीचे जमुनाजी के दोनों किनारे पर सुन्दर बैठकें बनी हैं।

किनारे कठेड़ा बैठक, अति सुंदर थंभ सोभात।
दोऊ तरफों चबूतरे, खूबी इन मुख कही न जात।। २५ ।।

बैठक के किनारे कठेड़ा लगा है और दो-दो थंभों की दोनों तरफ हारें शोभा देती हैं। इस तरह से जमुनाजी के दोनों तरफ के चबूतरे बड़े सुन्दर हैं। जिनकी खूबी यहां के मुख से वर्णन नहीं होती।

जाए आगूं भई जोए जाहेर, ढांपिल दोऊ किनार।
ऊपर कलस दोऊ कांगरी, और थंभ सोभे हार चार।। २६ ।।

आगे चलकर जमुनाजी खुली चलती हैं तथा दोनों किनारे महलों से ढके हैं। उन महलों के ऊपर कलश और कांगरी शोभा देती है और पाल के ऊपर दोनों तरफ चार थंभ एक सीध में शोभा देते हैं।

जड़ित किनारें दोऊ जल पर, दोऊ कठेड़े गिरदवाए।
ए सुख लेती मासूक संग, इत अचरज बनराए।। २७ ।।

जमुनाजी के दोनों किनारे जड़ाव से जड़े हैं और दोनों तरफ कठेड़े लगे हैं। रूहें श्री राजजी महाराज के साथ यहां सुख लेती हैं। यहां के वनों की शोभा गजब की है।

इतथें चली तरफ ताल के, एक मोहोल एक चबूतर।
दोऊ किनारे कुसादी होए चली, इत सोभा लेत यों कर।। २८ ।।

जमुनाजी उत्तर से दक्षिण की ओर हौज कौसर ताल की तरफ चलती हैं। यहां मोड़ के किनारे से एक महल, एक चबूतरे के क्रम में शोभा बनती जाती है और जमुनाजी दोनों किनारे फैलकर चलती हैं।

आगूं पुल इत आइया, ऊपर बड़ी मोहोलात।
कई देहेलान झरोखे जल पर, जल चल्या घड़नाले जात।। २९ ।।

आगे केल के घाट के पास केल-पुल आ जाता है। जिसके ऊपर पांच भोम छठी चांदनी है। जल के ऊपर सुन्दर झरोखे और देहलान दिखाई देती है। नीचे से जमुनाजी का जल दस घड़नालों से आगे जाता है।

पुल पांच भोम छठी चांदनी, चारों तरफों बराबर।
ए कहां गए सुख रूहन के, ए हम क्यों गए ठौर बिसर।। ३० ।।

पुल की पांच भोम छठी चांदनी चारों तरफ से बराबर है। इस ठिकाने को हम रूहें क्यों भूल गईं: हमारे यह सुख कहां चले गए?

Nijanand App

सात घाट बने बीच में, पुल दूजा तिनके पार।
दोऊ मोहोल झरोखे बराबर, इत हिंडोले ठंढ़ी बयार।। ३१ ।।

केल के पुल के आगे सात घाट आए हैं। उसके बाद दूसरा पुल (बट का पुल) आया है। दोनों पुलों के महलों के झरोखे बराबर आमने-सामने हैं। इनमें झूले चलते हैं और ठंडी हवा आती है।

पुल से आगे घाट केलका, ले चल्या जमुना जोए।
केल किनारे मिल्या मधुबन, पुखराज अर्स बीच दोए।। ३२ ।।

केल के पुल के आगे केल घाट जो जमुनाजी के किनारे पर है, के किनारे से मधुवन लगा है जो पुखराज पहाड़ और रंग महल दोनों के बीच आता है।

लटक रही केलां जोए पर, अति खूबी खूबतर।
ए सुख कब लेसी इन घाट के, खेलें विध विध जानवर।। ३३ ।।

जमुनाजी के जल के ऊपर केले के गुच्छे लटकते हैं जो बहुत ही सुन्दर हैं। यहां तरह-तरह के जानवर खेल करते हैं। इस घाट के सुख हम रूहें कब लेंगी?

इन आगूं घाट लिबोई का, लग्या हिंडोलों जाए।
क्यों कहूं छब छत्रियन की, ए घाट अति सोभाए।। ३४ ।।

इसके आगे नीबू का घाट है जो ताड़वन के हिंडोलों से लगता है। इसकी छत्रियों की शोभा बेशुमार है। कैसे कहूं?

इत सुख लेवें सब मिलके, रूहें बड़ीरूह हकसों।
सो फेर सुख कब हम देखसी, लेसी बैठके हिंडोलों।। ३५ ।।

यहां पर श्री राजश्यामाजी और रूहें हिंडोलों में बैठकर सुख लेती हैं। यह सुख हम फिर कब लेंगे?

इन आगूं घाट सोभित, अति बिराजे जोए किनार।
काहूं काहूं बीच मोहोल है, बन सोभे हार अनार।। ३६ ।।

नीबू के घाट के आगे अनार का घाट जमुनाजी के किनारे पर है। जिसके बीच-बीच में कहीं-कहीं महल बने हैं। अनार के हारों की बड़ी सुन्दर शोभा है।

जाए मिल्या अर्स दिवालों, सोले गुरज झरोखे बीस।
हर गुरज बीच बीच में, मोहोल सोभे झरोखे तीस।। ३७ ।।

यह रंग महल की दीवार को जाकर लगता है जिसके पूरब की तरफ सोलह गुर्जों के चार सौ अस्सी और बीस (पांच सौ) झरोखे आए हैं। हर गुर्ज के बीच-बीच में तीस-तीस झरोखे और मन्दिरों की शोभा है।

इन घाटके ऊपर, रोसन पांच सै झरोखे।
इन बन मोहोलों मासूक संग, सुख कब लेसी हम ए।। ३८ ।।

इस घाट के ऊपर इस तरह से रंग महल के ५०० झरोखे आए हैं। इस अनार के वन के महलों में श्री राजजी महाराज के साथ यह सुख कब मिलेंगे?

Nijanand App

ए झरोखे एक भोम के, यों भोम झरोखे नवों ठौर।
तिन ऊपर चांदनी कांगरी, तापर बैठक विध और।। ३९ ।।

रंग महल की एक भोम के झरोखे की तरह नौ भोमों के झरोखों की शोभा है। जिसके ऊपर चांदनी की कांगरी शोभा देती है। चांदनी के ऊपर की बैठक की और ही शोभा है।

आगूं पाट घाट मोहोल सुन्दर, जल पर अति सोभाए।
तले घड़नाले तिनमें, बीच तीन नेहेरें चली जाए।। ४० ।।

रंग महल के आगे जमुनाजी के जल पर सुन्दर पाट घाट शोभा देता है जिसके नीचे से जमुनाजी के तीन घड़नाले निकलते हैं।

थंभ बारे पाट चांदनी, जल हिस्से तीसरे जोए।
चारों खूंटों थंभ नीलवी, थंभ आठ चार रंग सोए।। ४१ ।।

जमुनाजी के जल के ऊपर थंभों पर जो पाट (तख्त) आया है उसके नीचे जमुनाजी का तीसरा हिस्सा निकलता है। इस पटाव के ऊपर चारों खूंटों पर चार थंभ नीलवी के हैं। चारों दिशाओं में चार रंग (हीरा, मानिक, पाच, पुखराज) के दो-दो थंभ पूरब, दक्षिण, पच्छिम, उत्तर में आए हैं।

लग कठेड़े रूहें बैठत, कई रंग जवेरों जोत।
बीच बैठे मासूक आसिक, जल बन आकास उद्दोत।। ४२ ।।

किनारे पर कठेड़ा है जहां रूहें बैठती हैं। जवेरों के रंगों की ज्योति आपस में टकराती है। बीच में श्री राजश्यामाजी बैठे हैं जहां जल की और वन की तरंगें आकाश में जगमगाती हैं।

इत सोभित बन अमृत, और कई विध बन अनेक।
ए जाए मिल्या लग चांदनी, अर्स आगूं बन विवेक।। ४३ ।।

यहां पर अमृत वन की शोभा है और कई तरह के मेवे के वन हैं जो आगे जाकर चांदनी चौक तक जाता है।

द्वार अर्स अजीम का, और नूर द्वार जोए पार।
ए सुख कब हम देखसी, इन दोऊ दरबार।। ४४ ।।

रंग महल का दरवाजा तथा जमुनाजी के पार अक्षरधाम का दरवाजा आमने-सामने हैं। इन दोनों दरवाजों की इस शोभा को हम कब देखेंगे?

नूर पार भी एह बन, और पहाड़ पुखराज।
इन आगूं बड़ा बन चल्या, रह्या सागरों लग बिराज।। ४५ ।।

अक्षरधाम तक यह महावन गया है। पुखराज पहाड़ को भी घेरकर बड़े-वन के साथ मिलकर सागरों तक यह वन जाते हैं।

नजर फिरी मेरी दूर लग, देख्या बन विस्तार।
नीला पीला स्याम सेत कई, कहों कहां लग कहूं न सुमार।। ४६ ।।

मेरी नजर जहां तक जाती है वन ही वन दिखाई देता है। कहीं नीली, कहीं पीली, कहीं श्याम, कहीं सफेद रंगों की बेशुमार शोभा है। कहां तक कहूं?

Nijanand App

जिमी सब बराबर, बन पोहोंच्या सागर जित।
या बन या मोहोलों मिने, नेहेरें चली गैयां अतंत।। ४७ ।।

सागरों तक सम्पूर्ण जमीन समतल है। वन या महलों के बीच में बेशुमार नहरें चलती हैं।

पार ना पहाड़ों हिंडोलों, नहीं मोहोलों नेहेरों पार।
पार ना बन नेहेरें जिमी का, क्यों पसु पंखी होए निरवार।। ४८ ।।

पहाड़ों का, हिंडोलों का, महलों का, जवेरों की नहरों का, वन की नहरों का, जमीन का हिसाब नहीं है, तो पशु पक्षियों का कैसे विवरण बताया जाए?

पार न आवे सागरों, और पार किनारों नाहें।
पार ना मोहोलों किनारों, कई नेहेरें आवें जाएं।। ४९ ।।

सागरों का पार नहीं है और उनके किनारे बड़ी रांग की हवेली तथा अन्दर टापू महलों में कई तरह से नहरें आती-जाती हैं यह बेशुमार हैं।

मोहोल जिमी बन कहत हों, और पहाड़ नेहेरें बनराए।
ए कैसे होसी अर्स के, ए देखो रूह जगाए।। ५० ।।

मैं संसार में बैठकर परमधाम के महल, जमीन, वन, पहाड़, नहरें और वृक्षादि के बारे में कहती हूं। यह अखण्ड परमधाम के कैसे होंगे? उन्हें अपनी आत्मा को जगाकर देखो।

कई फौजें पसुअन की, कई फौजें जानवर।
जिमी खाली कहूं न पाइए, बसत अर्स लसकर।। ५१ ।।

परमधाम में पशुओं और जानवरों के लश्कर के लश्कर (समूह) बसते हैं। कहीं भी जमीन खाली नहीं है।

जिमी बन ए लसकर, जिमी बस्ती न कहूं वीरान।
सब आए मुजरा करत हैं, आगूं अर्स सुभान।। ५२ ।।

जमीन और वन की बस्तियां जानवरों की फौजों से भरी पड़ी हैं। कहीं वीरान नहीं है। यह सब जानवर श्री राजजी को मुजरा करने रंग महल के सामने आते हैं।

ए पातसाही अर्स की, केहेनी में आवत नाहें।
ए कह्या वास्ते मोमिन के, जानों दिल दौड़ावें तांहें।। ५३ ।।

यह परमधाम की बादशाही है जो कहने में नहीं आती। यह मोमिनों के वास्ते कहा है जिससे वह अपना मन वहां लगा सकें।

एक पात न गिरे बन का, ना खिरे पंखी का पर।
एक जरा जाया न होवहीं, ए अर्स जिमी यों कर।। ५४ ।।

यहां वन का एक भी पत्ता नहीं गिरता और न पक्षी का पर (पंख) ही गिरता है। परमधाम की जमीन इस तरह की है कि यहां कुछ भी नष्ट नहीं होता।

Nijanand App

सब जिमी मोहोल हक के, और सब ठौरों दीदार।
सब अलेखे अखंड, कहे महामत अर्स अपार।।५५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम की शोभा बेशुमार है। यहां की सब जमीन और महल बेशुमार हैं तथा अखण्ड हैं सब जगह से श्री राजजी महाराज का दर्शन होता है।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। १२२१ ।।

पसु पंखियों की पातसाही

एह निमूना ख्वाब का, किया कारन उमत।
कायम अर्स ख्वाब में, देखाया लेने लज्जत।। १ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते यह नमूना स्वप्न का बनाया जिससे वह स्वप्न में बैठकर अखण्ड परमधाम की लज्जत ले सकें।

ब्रह्मसृष्ट कही वेद ने, अहेल-अल्ला कहे फुरमान।
निसबत सुख ख्वाब में, कर दई हक पेहेचान।। २ ।।

वेद में जिन्हें ब्रह्मसृष्टि कहा है, कुरान में उन्हें अल्लाह का वारिस कहा है। संसार के अन्दर श्री राजजी महाराज ने अपनी निसबत की पहचान करा दी है।

एक साहेबी अर्स की, और कोई काहूं नाहें।
आराम देने उमत को, देखाया ख्वाब के माहें।। ३ ।।

परमधाम की साहेबी के समान और कहीं कुछ है ही नहीं, इसलिए ब्रह्मसृष्टि को आराम देने के लिए स्वप्न में साहेबी दिखाई।

ख्वाब देखाई साहेबी, और अर्स की हैयात।
ए दोऊ तफावत देख के, अंग में सुख न समात।। ४ ।।

स्वप्न में एक तो परमधाम की साहेबी दिखाई और दूसरी अखण्डता दिखलाई। इन दोनों में (सत और झूठ में) फर्क देखकर अंगों में सुख नहीं समाता है।

अब कहूं अर्स अजीम की, और बन का विस्तार।
नहीं इंतहाए जिमी जंगल का, ना पसु पंखी सुमार।। ५ ।।

अब परमधाम के वनों का विस्तार बताती हूं। यहां जंगल जमीन बेशुमार हैं और पशु पक्षियों की भी कोई गिनती नहीं है।

इन रेत रंचक की रोसनी, आकास न मावे नूर।
तो रोसनी सब बन की, क्यों कर कहूं जहूर।। ६ ।।

यहां की रेत के एक कण का तेज आकाश में नहीं समाता तो पूरे वन की रोशनी का कैसे बयान करूं?

तेज ऐसो इन डारको, और पात को प्रकास।
सो रोसनी ऐसी देखत, मावत नहीं आकास।। ७ ।।

वनों की डाल और पत्ते का ऐसा प्रकाश है कि इनकी रोशनी आकाश में नहीं समाती।

Nijanand App